RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

चीन में बोद्ध धर्म सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ पारुल त्यागी

अस्थाई प्रवक्ता, इंद्रप्रस्थ इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेंट, हापुड़, उत्तर प्रदेश

चीनी बौद्ध धर्म का इतिहास उस शक्तिशाली विदेशी संस्कृति के समान है, जिसे अपने ही समान सशक्त देशीय संस्कृति से मुठभेड़ होने पर समन्वय एवं विरोध की विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना होता है । किसी भी विदेशी संस्कृति पर प्रवेशकाल में उसके अल्प प्रभाव के कारण प्रायः ध्यान नहीं दिया जाता, परन्तु जब उसके प्रभाव में वृद्धि होने लगती है, तो उसमें राष्ट्रीय संस्कृति के लिए आशंका उत्पन्न हो जाती है, और प्रतिक्रियाऐं शुरू हो जाती है । परन्तु उस समय तक वह विदेशी संस्कृति किसी सीमा तक राष्ट्रीय संस्कृति की धारा में समाहित हो चुकी होती है । अतः उसकी पृथक व्याख्या सम्भव नही होती। इस स्थिति में समन्वय प्रक्रिया का आरम्भ होता है, और विदेशी संस्कृति या तो राष्ट्रीय लक्षणों को अपना लेती है, अथवा उसका सामान्यीकरण हो जाता है । तात्पर्य यह है कि कोई भी विदेशी संस्कृति राजनीतिक समर्थन के बावजूद तब तक सुदृढ़ नही होती, जब तक वह देश के वातावरण एवं संस्कृति से अपना तार्तम्य स्थापित न कर ले ।[1]

जिस समय बौद्ध धर्म का ज्ञान चीन के लोगो को हुआ उस समय चीन की परिस्थिति उसकी स्वीकृति के बिल्कुल अनुकूल थे ।[2] क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टि से चीन में प्रचलित दोनो दर्शन कंफ्यूशियसवाद और ताओवाद अविकसित और अपूर्ण थे।[3] कंफ्यूशियस धर्म के गंभीरतम आध्यात्मिक प्रश्नों का कोई उत्तर न दे पाता था और न लोगो की धार्मिक पिपासा को ही शांत कर पाता था ।[4] दूसरी और ताओवाद ने धर्मिक चिंतन की कामना जगा, एक ऐसे अनिश्चत 'कुछ' की कामना जगा दी थी, जो जीवन को प्रकाश और अमरता की आशा से भर सके । उसमें तो इसका भी संकेत किया गया था कि ऐसा कोई धर्म पश्चिम से अर्थात भारत से आयेगा । बौद्ध धर्म की ज्योतिमर्म आध्यात्मिकता और उसके धार्मिक अनुष्ठान व उपासना के उज्ववल स्वरूपों की बडी प्रंशसा की गई ।[5]

चीनी लोगो के गंभीर आध्यात्मिक विचारों को बौद्ध धर्म ने अपने नैतिक अभ्यास द्वारा निर्वाण तथा आध्यात्मिक कर्म–योग के सिद्धान्त से बहुत प्रभावित किया । बौद्ध धर्म का शुरू से ही चीन में सामाजिक रूप था । इसके माध्यम से समाज के सारे वर्ग एक समान धरातल पर आकर एक दूसरे से मिल–जुल रहे थे । इसका कर्म का सिद्धान्त सामाजिक और आर्थिक भेदो के समझाने की कुँजी था । उसने अमीरों को यह बताया कि उनकी सम्पन्नता पहले किये गये अच्छे कर्मो का फल है । और उसी हालात में आगे बनी रह सकती है । जब वे बराबर अच्छे कर्म करते रहे और गरीबो को यह आश्वासन दिया गया कि उनकी परेशानी पिछले कुकर्मो का नतीजा है और इसे खत्म करने के लिए उन्हे पवित्र जीवन व्यतीत करना और अपने कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिए । इसकी कर्म की धारणा भौतिक और शारीरिक के बजाय चैतसिक और नैतिक अधिक थी । इससे आम लोगो को काफी संतुष्टि मिली ।[6]

यह सम्भव नही कि बौद्ध धर्म प्रथम शताब्दी से पहले ही चीन पहुँच गया हो किन्तु यह सत्य है कि बौद्ध धर्म का चीन में प्रवेश 65 ई0 में ही हुआ ।[7] सन् 65 ई0 में सम्राट ने एक स्वप्न देखा जिसमें उन्हें एक सोने की मूर्ति दिखाई दी और जब उन्हें मालूम हुआ कि वह मूर्ति बुद्ध की है तो सम्राट ने एक विद्वान सेनाध्यक्ष चिइन चिंग को नियुक्त किया कि वह बौद्ध धर्म के ग्रन्थों और विद्वानों को भारत जाकर ले आये । दो वर्ष तक खोजने के बाद यूची (कुषान) राज्य से कश्यप मातंग और धर्मरक्षक के कुछ बौद्ध ग्रन्थों को साथ ले गया । दोनों उपदेशक अपने साथ एक श्वेत अश्व ले गये थे जिस पर पवित्र ग्रंथ और अवशेषांश लदे हुए थे । सम्राट के आदेश पर उनके लिए राजधानी में विहार बनवाया गया जिसका नाम 'श्वेताश्व विहार' (The white horse Monastery) था । दोनों स्थाविरों (भिक्षुओं) ने अपना शेष जीवन बौद्ध ग्रन्थों के चीनी भाषा में अनुवाद करने में लगाया और यह विहार चीन में बौद्ध धर्म का सबसे बडा केन्द्र बन गया ।[8]

इस प्रकार चीन में बौद्ध धर्म का प्रवेश हुआ । पहले दो शताब्दियों में चीन में बौद्ध प्रचारकों का सबसे बड़ा कार्य बौद्ध ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद था । इससे चीन में इस धर्म के प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ । अनुवाद कार्य का श्री गणेश कश्यप और मातंग ने किया था ।[9]

जहॉ एक ओर इसने प्रचारकों की निःस्वार्थ भावना, कठोर अध्यवसाय और सुधार के उत्साह ने जन सामान्य को मुग्ध कर लिया, वही बौद्ध धर्म के गम्भीर दार्शनिक रचनाओं ने बौद्धिक वर्ग को अपनी ओर आकर्षित किया ।[10]

संस्कृत एवं चीनी भाषा एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न थी । इसलिए अनुवाद कार्य के लिए बौद्ध भिक्षुओं ने 'ताओवादी' शब्द का प्रयोग किया जैसे– 'बोधि' के लिए 'ताओ' और 'अर्हत' के लिए 'चेन–जेन' । यह भी सम्भव ही है कि प्रारम्भ में बौद्ध भिक्षुओं ने चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार करने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के लिए 'ताओवादी' शब्द अपना लिया हो; क्योंकि चीनी समाज में निर्वाण एवं अर्हत के स्थान पर 'ताओ' शब्द 'वू–वी' या 'चेन–जेन' अधिक स्वीकार्य थे । बौद्ध धर्म ने न केवल ताओवादी शब्दों को ही अपनाया वरन् कन्फ्यूशियसवादी शब्दों को भी अपनाया, जैसे 'शील' के लिए 'शिआओ शून' ।[11]

इस प्रकार चीन में बौद्ध धर्म की जड़ पकड़ते ही भारतीय पण्डित इस ओर आकृष्ट हुए और बहुत बड़ी संख्या में चीन जाने लगे । प्रथम शताब्दी में चीन जाने वाले भिक्षुओं में आर्यकाल, श्रवण सुविनय, स्थाविर चिलुकाक्ष आदि के नाम उल्लेखनीय है, । दूसरी शताब्दी के अन्त होने से पूर्व ही महाबल चीन गये । इन्होंने लोयांग विहार में रहकर संस्कृत ग्रन्थों का चीनी भाषा मे अनुवाद किया । तीसरी शताब्दी में धर्मपाल चीन पहुॅचे । इन्होंने चीन में आकर देखा कि चीनी जनता विनय के नियमों से सर्वथा अपरिचित थी । ये नियम 'प्रतिमोक्ष सूत्र' में संगृहित थे । इन्होंने प्रतिमोक्ष का चीनी भाषा में अनुवाद का कार्य समाप्त किया । 224 ई0 में दो पण्डित विघ्न और तुहायांन चीन गये ओर अपने साथ 'धम्मपद' सूत्र ले गये । दोनों ने मिलकर उसका अनुवाद किया । तीसरी शताब्दी समाप्त होते – होते कल्याणरन, कल्याण और गोररक्ष चीन पहुॅचे और अनुवाद कार्य में जुट गये । बौद्ध धर्म की हीनयान तथा महायान शाखाओं के अनेकानेक ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया गया । सैकड़ो विहारों और चैत्यों की स्थापना हुई और बौद्ध धर्म, विशेषतः उसकी महायान शाखा ने चीन में विशेष स्तर पर उन्नति की । चीन में भी बौद्ध धर्म के अनेक विद्वान हुऐ । सिनवंश के शासन काल में बौद्ध धर्म को राज्य की ओर से काफी प्रोत्साहन मिला ।[12]

281 ई0 तक उत्तर पश्चिम चीन में प्रत्येक दस व्यक्तियों में नौ बौद्ध थे । चिन वंश के सम्राट वू (265–290) ने बौद्ध धर्म के प्रति गहरी अभिरूचि दिखाई और सम्पूर्ण साम्राज्य में अनेक विहारों की स्थापना की । सम्राट मिन ने भी अपने अल्प कालीन शासन के दौरान चांग आन में दो बौद्ध विहारों का निर्माण करवाया था । यूआन–टी (317–322ई0) और उनके वंशजो ने लगभग सौ वर्षो के शासन काल में 17,608 बौद्ध प्रतिष्ठानों की स्थापना की, और 263 बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद किया । उत्तरी वेई राजवंश ने भी बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया और इस वंश के शासन–काल में भी बौद्ध कला की अभूतपूर्व प्रगति हुई । इस अवधि में सहस्रों बौद्ध मन्दिरों का निर्माण हुआ तथा भिक्षु–भिक्षुणियों की संख्या बीस लाख तक पहुॅच गई । अनेक लब्धप्रतिष्ठित भारतीय और चीनी विद्वान जैसे कुमारजीव, बोधिरूचि, ताओआन, हुई–युआन और फाह्यान इसी युग में हुऐ जिन्होंने चीन में बौद्ध धर्म को स्थापित करने व उसकी जड़े युगों तक के लिए मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।[13]

चीन में भारतीयों की संख्या दिनोंदिन पढ़ रही थी तत्कालीन चीनी विवरणों से ज्ञात होता है कि छठी शताब्दी के आरम्भ में तीन हजार से अधिक भारतीय चीन में निवास कर रहे थे । इनके रहने के लिए चीनी राजाओं ने चीन में बहुत से सुन्दर विहारों का निर्माण करवाया था । इनमें से बहुत से तो लोयांग में ही रहते थे ।[14]

इस समय दक्षिण चीन में 'सुंग' वंश समाप्त हो गया था तथा लियंग वंश का शासन था । वू–ती इस वंश का प्रथम सम्राट था । प्रारम्भ में वह कन्फ्यूशियस का अनुयायी था किन्तु बाद में न केवल उसने बौद्ध धर्म अपनाया वरन् वह बौद्ध धर्म का प्रबल पोषक हुआ । उसने नानकिंग में एक विशाल विहार का निर्माण करवाया । उसने बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर पशुबलि बन्द करा दी । उसने दो चैत्य बनवाये तथा 1000 सोने की मूर्तियों का निर्माण करवाया । प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु बोधि धर्म 520 ई0 में इसी के शासन काल में भारत आया ।[15]

यह तो सत्य ही है कि चीन में बौद्ध धर्म को कई राजाओं द्वारा संरक्षण प्राप्त हो गया था इसके विपरीत यह भी पूर्ण सत्य है कि समय–समय पर बौद्ध धर्म को कटु आलोचना का सामना भी करना पड़ा था। इस धर्म ने चीन में अनेक प्रबल अघातों और प्रतिशोधों का डट कर सामना किया ।[16]

हैन यू नाम के कट्टर कन्फ्यूशियन विद्वान और लेखक ने बौद्ध धर्म की निन्दा करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी । उसके प्रभाव में आकर शासन ने 845 ई0 में राजकीय आदेश से 4,600 मन्दिर और 4,000 मठ नष्ट कर दिये तथा 2,60,500 भिक्षु और भिक्षुणी गृहस्थ बनायें गये। शासन ने ऐसी लाखों एकड़ भूमि जब्त कर ली जिसकी उपज से बौद्ध भिक्षुओं की जीविका चलती थी । सोने, चॉदि, मणियों, हाथी दॉत तथा अन्य कीमती सामान की बनी बुद्ध मूर्तियॉ सरकारी खजाने को सौंप दी गई । कांसे की बौद्ध प्रतिमाएँ नमक और लोहे के सरकारी अधिकारी को सौप दि गई जिन्हे गलाकर सिक्के बनाने के काम में उपयोग किया गया । लोहे की मूर्तियॉ शासकीय मजिस्ट्रेटों को दे दी गई जिनका उपयोग खेती के औजार बनाने के लिए किया गया । अन्त में 955 ई0 में बौद्धों का दमन जब चरम अवस्था पर पहुॅचा तो 30,400 बौद्ध मठ नष्ट कर दिये गये । केवल 27,00 मठ जो अत्यन्त कलापूर्ण थे, सुरक्षित खड़े रह गये थे । बौद्ध धर्म इतने अवरोध और विरोध के बावजूद प्रगति पथ पर अग्रसर रहा । उसके उतार–चढ़ाव उत्तर, दक्षिण में प्रायः समभाव से होते रहे । धीरे–धीरे बौद्ध धर्म ने अपना कठिन समय भी धैर्य और संयम के साथ व्यतीत किया ।[17]

बौद्ध धर्म के आगमन ने चीनी राष्ट्र के जनजीवन मे एक नवीन दृष्टि को जन्म दिया । अवश्य ही पिछली शताब्दियों में वहॉ बौद्ध धर्म का तेजी से ह्रास हुआ, परन्तु इस तथ्य को भुलाया नही जा सकता कि चीन में प्रतिष्ठा और लोकप्रियता अर्जित करने के साथ ही बौद्ध धर्म ने चीनी संस्कृति एवं जनजीवन को भी प्रभावित किया ।

इस सम्बन्ध यह भी सत्य है कि भारत ने बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए किसी भी सैन्य शक्ति का प्रयोग नही किया । चीन के सम्बन्ध में यह बात पूर्ण रूप से सम्भव नही

RRIJM 2015, All Rights Reserved

थी क्योंकि चीन भारत से अधिक शक्तिशाली एवं बड़ा देश है । अतः चीन में भारतीय संस्कृति के इस प्रसार को मानवीय विचारों के आदान–प्रदान तथा सांस्कृतिक संयोग के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ चाइनीज सिविलाइजेशन – विलहेलम, 1929 – पृ0सं0 245
2. दि ट्रूथ एण्ड ट्रेडिशनल इन बुद्धिज्म – केरी लुडविंग रिचल्ट, 1930 – पृ0सं0 9
3. चाइनीज आर्ट एण्ड कल्चर– रेने ग्रूसे, फर्स्ट एडीशन, 1959, यू0के0 – पृ0सं0
4. दि ट्रूथ एण्ड ट्रेडिशनल इन बुद्धिज्म – पूर्वोक्त – पृ0सं0 9
5. इपऑक् ऑफ बुद्धिस्ट हिस्ट्री – श्री साडर्स, 1924 – पृ0सं0 122
6. एशिया का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की रूपरेखा – डा0 बुद्धप्रकाश, प्रथम संस्करण, 1971 – पृ0सं0 124
7. विश्व इतिहास (प्राचीन काल) – डा0 रामप्रसाद त्रिपाठी, लखनऊ, 1988 – पृ0सं0 395
8. प्राचीन भारत का राजनैतिक व सामाजिक इतिहास – हरिदत्त वेदालंकार – प्रथम संस्करण , 1972 – पृ0सं0 65
9. विश्व इतिहास (प्राचीन काल) – पूर्वोक्त – पृ0सं0 396
10. ए हिस्ट्री ऑफ चाइना – वॉलफ्रेम एबरहार्ड, लन्दन, 1950 – पृ0सं0 142
11. ए हिस्ट्री ऑफ चाइना – पूर्वोक्त – पृ0सं0 143
12. बुद्धिज्म इन चाइना – केनेथ चेन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1965 – पृ0सं0 58
13. वृहत्तर भारत – चन्द्रगुप्त वेदलंकार – पृ0सं0 78
14. वृहत्तर भारत – पूर्वोक्त – पृ0सं0 79
15. बुद्धिज्म इन चाइना – आर्थर एफ0 राइट – पृ0सं0 34
16. वृहत्त भारत – पूर्वोक्त – पृ0सं0 186
17. एशिया की विकासोन्मुख एकता – श्री कृष्ण वेङटेश पुणताम्बेकर, अनुवादक चन्द्रशेखर शुक्ल, बलभद्र प्रसाद मिश्र, लखनऊ – पृ0सं0 131–32

RRIJM 2015, All Rights Reserved